DATE 28.10.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा') कहानी
पुस्तक - नवतरंग - 7 (शेष भाग, भाग-3)

प्यारे बच्चो! सुप्रभात।

अब हम पाठ के शेष भाग को पढ़ेंगे। अत: सब बच्चे अपनी साहित्य की पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ-84 को खोलें साथ ही अभ्यास-पुस्तिका लेखन कार्य करने के लिए तैयार रखें। पाठ पढ़ाते समय मैं आपसे प्रश्न पूछती जाऊँगी। इन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का कालांश लेंगे। अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं।

बच्चो! पिछले सप्ताह हमने पढ़ा था कि पंडित अलोपीदीन अपने धन के बल पर अपराधी होते हुए भी कानून के शिकंजे से छूट जाते हैं क्योंकि उन्होंने न्यायाधीश को अपने पक्ष में ले लिया था। ईमानदार मुंशी वंशीधर के कार्य और सजगता की प्रशंसा करते हुए भविष्य में होशियार रहने की चेतावनी देते हैं। वंशीधर ने धन से बैर (दुश्मनी) मोल लिया था इसलिए उन्हें इसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। एक सप्ताह ही बीता था कि मुंशी वंशीधर की मुअत्तली का परवान आ गया था। उन्हें अपनी कार्य-परायणता का दंड मिला था। घर पहुँचकर वंशीधर ने अपने माता-पिता को अपनी मुअत्तली का समाचार सुनाया तो वे बहुत दुखी हुए क्योंकि उनकी इच्छा थी कि वे जगन्नाथ और रामेश्वरम् की यात्रा करें, अब वे नहीं कर सकेंगे। उनकी पत्नी भी उनसे रुष्ट हो गई।

इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया। वंशीधर के पिता एक दिन शाम के समय द्वार पर बैठे थे तभी उन्होंने पंडित अलोपीदीन के रथ को अपने द्वार पर देखा तो वे सकपका गए और पंडितजी के स्वागत के लिए आगे बढ़े। अपने बेटे को

Scanned with CamScanner

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा')

दोषी ठहराते हुए क्षमा माँगते हैं। अलोपीदीन ने उनकी बात बीच में काटते हुए कहा, "नहीं भाईसाहब, ऐसा न कहिए। वंशीधर ने स्वाभिमान के साथ अलोपीदीन का स्वागत किया। वंशीधर समझ गए थे कि पंडितजी उन्हें अपमानित करने आए हैं। लेकिन अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा, "दारोगाजी, उस रात तो आपने अपने अधिकार-बल से मुझे हिरासत में लिया था, आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में आया हूँ। मैं किसी से परास्त नहीं हुआ सिवाय आपके।" आपने अपने धर्म और कर्त्तव्य की खातिर धन को ठुकरा दिया था। अब मैं आपसे कुछ विनय करने आया हूँ!

वंशीधर ने अलोपीदीन की बातें सुनीं तो उनके मन का मैल धुल गया और उनसे क्षमा माँगते हुए अपने धर्म और कर्त्तव्य की बात कही। वे अलोपीदीन से उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। तभी अलोपीदीन ने एक स्टांपलगा एक पत्र निकाला और वंशीधर के सामने रखते हुए बोले, "इस पद को स्वीकार करें और इस पर हस्ताक्षर कर मेरी विनती को पूर्ण और सार्थक करें। जब तक आप मेरी बात नहीं मानेंगे, मैं आपके द्वार से वापस नहीं जाऊँगा।

मुंशी वंशीधर ने उस कागज़ को ध्यान से पढ़ा जिसमें लिखा था कि पंडित अलोपीदीन अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर आपको नियुक्त करते हैं। जिसमें उन्हें छह हज़ार रुपए वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोज़ाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़ा, रहने को बँगला, चौकर-चाकर मुफ़्त। मुंशी वंशीधर काँपते स्वर में बोले, "पंडितजी, मैं इस पद के योग्य नहीं हूँ।" यह बात सुनकर पंडित अलोपीदीन बोले, "मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही ज़रूरत है।"

बच्चो! अब मैं आपसे पाठ से संबंधित कुछ प्रश्न पूछूँगी। इनका उत्तर आप तीन मिनट का समय लेकर लिखेंगे।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

28.10.24

DATE
PAGE No. 3

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 'नमक का दारोगा') -3

प्रश्न-1. डिप्टी मजिस्ट्रेट ने पंडित अलोपीदीन के बारे में क्या निर्णय सुनाया?
प्रश्न-2. मुंशी वंशीधर को अपनी ईमानदारी की कीमत क्या चुकानी पड़ी?
प्रश्न-3 मुंशी जी के परिवार के सदस्य उनसे क्यों नाराज़ हो गए?
प्रश्न-4 अचानक एक दिन अलोपीदीन वंशीधर के द्वार पर क्यों आए? इससे उनके पिता पर क्या प्रभाव पड़ा?

बच्चो! अब आपके अंतराल का समय समाप्त हुआ अब मैं इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी जो इस प्रकार हैं-

उत्तर-1. डिप्टी मजिस्ट्रेट ने निर्णय सुनाया, पंडित अलोपीदीन पर जो आरोप लगाए हैं; वे प्रमाण निराधार हैं। वे थोड़े-से लाभ के लिए ऐसा गलत काम नहीं करेंगे। मुंशीजी की उद्दंडता के कारण एक भले मानुस को कष्ट झेलना पड़ा।

उत्तर-2. मुंशीजी को पता नहीं था कि उन्हें अपनी ईमानदारी की कीमत नौकरी से मुअत्तल (पदच्युत) होकर चुकानी पड़ेगी। वंशीधर ने धन से बैर मोल ले लिया था।

उत्तर-3 मुंशीजी की नौकरी लगने से सबको उनसे अपेक्षा थीं कि वे सब अपनी इच्छाएँ पूरी कर सकेंगे। माता-पिता जगन्नाथ धाम तथा रामेश्वरम् की यात्रा पर जा सकेंगे। लेकिन बंशीधर के मुअत्तल होने से सबकी आशाओं पर पानी फिर गया। इसलिए वे सब उनसे नाराज़ हो गए। साथ ही अलोपीदीन एक दबंग आदमी था। वह किसी का भी अहित करा सकता था।

उत्तर-4. अलोपीदीन के अपने द्वार पर अचानक आता देख वंशीधर के पिता के पैरों ज़मीन खिसक गई। वे उनकी लल्लो-चप्पो करने लगे और अपने पुत्र को कुपुत्र कहकर कोसने लगे। वे डर गए थे कि अब और

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-10 नमक का दारोगा')-3

क्या मुसीबत आने वाली है? अलोपीदीन तो वंशीधर को अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त करने की इच्छा से उनके द्वार पर आए थे।

बच्चो! अब हम पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं। पंडित अलोपीदीन के अनुनय-विनय करने पर वंशीधर ने कहा, "आप जैसे पुरुष की सेवा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है किंतु मुझमें न विद्या है, न बुद्धि, न वह स्वभाव जो इन त्रुटियों को पूरा कर देता है। ऐसे महान कार्य के लिए एक बड़े अनुभवी मनुष्य की ज़रूरत है।" मुंशी वंशीधर की बात सुनकर अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और वंशीधर के हाथ में देते हुए बोले, "अब सौभाग्य ने मुझे वह मोती दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वत्ता की चमक फीकी पड़ जाती है। आप इन कागज़ों पर दस्तखत कर दीजिए। मेरी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह सदैव आपको वही नदी के किनारे वाला उद्दंड, कठोर, परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे।"

पंडित अलोपीदीन की आग्रह पूर्ण बातें सुनकर वंशीधर की आँखें डबडबा आईं। कांपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए। अलोपीदीन ने प्रफुल्लित होकर उन्हें अपने गले से लगा लिया।

बच्चो! यह मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी बहुत ही शिक्षाप्रद कहानी है जो हमें यह बताती है कि धर्म धन से अधिक बलवान है। वह किसी के आगे झुकता नहीं, अपितु झुका देता है। ईमानदारी से बढ़कर कुछ नहीं। ईमानदार व्यक्ति सब जगह सम्मान प्राप्त करता है। जैसे:- वंशीधर की ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता के आगे धनी-बली अलोपीदीन को भी झुकना पड़ा।

बच्चो! अब मैं कुछ प्रश्न और — आपसे पूछूँगी। तीन मिनट का समय लेकर आप इनके उत्तर लिखेंगे।

(पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner

DATE 28.10.24
PAGE No. 5

कक्षा- सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिन्दी साहित्य (पाठ-10 नमक का दारोगा") -3

प्रश्न-1. पंडित अलोपीदीन नमक से लदी गाड़ियाँ रोके जाने पर भी निश्चिंत क्यों थे?
प्रश्न-2. मुंशी वंशीधर को अलोपीदीन की किस बात पर क्रोध आया?
प्रश्न-3 वंशीधर ने किसे ललकार कर क्या करने को कहा?

बच्चो! अब आपका समय समाप्त हुआ। इन पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं —

उत्तर-1. पंडित अलोपीदीन धनी व्यक्ति थे। वे पैसे से सबके ईमान को खरीद लेते थे। उनका लक्ष्मी पर अखण्ड विश्वास होने के कारण वे नमक से लदी गाड़ियाँ पकड़े जाने पर भी निश्चिंत थे। उन्हें विश्वास था कि वे धन-रूपी बल से किसी को भी हरा सकते हैं, खरीद सकते हैं।

उत्तर-2. जब अलोपीदीन ने अपने मुख्तार से एक हज़ार के नोट मुंशी वंशीधर को भेंट करने के लिए कहा। साथ ही उन्हें भूखे शेर भी कहा। बस! यही पैसे का लालच देने वाली बात से वंशीधर को क्रोध आ गया।

उत्तर-3. वंशीधर ने अपने जमादार बदलूसिंह को ललकार कर पंडित अलोपीदीन को हिरासत में लेने को कहा।

यह पाठ यहाँ समाप्त हो गया है।

बच्चो! अब मैं आपको गृहकार्य दूँगी।

गृहकार्य:- शब्दों के अर्थ लिखेंगे। साथ ही पृष्ठ-86-87 पर दिए संक्षेप में और विस्तार से प्रश्नों के उत्तर लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

Scanned with CamScanner